Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 12, Issue March 2021 | Impact Factor 4.115

नैतिकता के विकास में संगीत का योगदान

परमजीत कौर
एसोसिएट प्रोफेसर (संगीत), सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी।

सारांश

हमारे जीवन में संगीत की भूमिका आज कला तथा मनोरंजन तक ही सीमित नहीं है। संगीत के अनुसंधान के विभिन्न द्वार खुले हैं जिसमें इसके सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा स्वतंत्र पहलुओं पर कार्य हो रहा है। भारत में नैतिकता को संगीत में अध्यात्म के साथ सम्बद्ध करके देखा जाता है जो धार्मिक प्रचार-प्रसार का माध्यम है परन्तु Ethics यानि आचार से सम्बन्धित संगीत के क्षेत्र में कुछ चर्चा नहीं होती। इसी को मध्य रखकर विभिन्न दार्शनिकों के विचारों से नैतिकता को समझने का प्रयास किया गया है। संगीत द्वारा किसी व्यक्ति के आचार-व्यवहार में कुछ ही समय में बदलाव सम्भव नहीं है लेकिन यदि घर में तथा समाज के विभिन्न सांगीतिक उत्सवों में अच्छे संगीत का प्रचलन बढ़े तब निश्चित रूप से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को नैतिकता का सबक सिखाया जा सकता है।

मानव अपने उद्भव काल से इस प्रकार की आचार संहिता का गठन करना चाहता है जिसे अपनाकर वह अपने जीवन में अच्छे तथा बुरे का निर्णय ले सके। दूसरे शब्दों में, यह ऐसे सार्थक मूल्यों की ओर आकर्षित होता है जो उसके कार्यों तथा विचारों दोनों में नैतिकतापूर्ण हो। नैतिकता के विभिन्न आयाम वह अपनी संस्कृति धर्म या पौराणिक विरासत से ग्रहण करता है।

Indian Ethics के सम्पादक 'पुरूषोत्मा बिलमोड़ा ने नीतिशास्त्र यानि Ethic को इस प्रकार परिभाषित किया है - 'Ethic' ग्रीक भाषा के ethos via ethikos शब्द से आया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है अभ्यस्तता या प्रथा, यह प्रचलित आचरण , नैतिक सिद्धांतो को लक्षणार्थ है। यह दर्शन शास्त्र की एक शाखा है जिसका सम्बन्ध कर्तव्य, दायित्व, वचनबद्धता तथा सही एवं गलत जैसी विचारधारा का विश्लेषण करना है। दूसरे शब्दों में नीतिशास्त्र-नैतिकता तथा उसके सिद्धांत विशेषत: उन तरीकों से जिनसे मानव आचरण को व्यवस्थित, नियंत्रित तथा मूल्यांकित किया जा सकता है, के स्वरूप की जांच करना है।

नैतिकता का संगीत के साथ किस प्रकार का सम्बंध है, के विवरण से पूर्व नैतिकता पर विश्व में स्थापित मान्यताओं को जान लेना विषयानुकूल होगा।

अरस्तु के मतानुसार - नैतिकता कोई बाहर की वस्तु नहीं है, यह जीव में स्वयं प्रस्फुटित होती है, नैतिकता 'स्वयं की पहचान' है। अरस्तु के पूर्व महान दार्शनिक सुकरात का मानना है कि मानव में अच्छे जीवन मूल्य स्थापित करने हेतु उसे अच्छे और बुरे का बोध होना आवश्यक है। उनका कथन है 'एक अपरिक्षित जीवन जीने योग्य नहीं। हमारे वृहदारण्यक उपनिषद् में वर्णित तीन गुण - स्वयं नियंत्रण, उदारता तथा क्षमा जीवन को सुखदयी एवं तुष्टि प्रदान करते हैं। बौद्ध तथा जैन धर्म में अहिंसा के साथ उपरोक्त गुणों को धारण करने पर जोर दिया गया है।

नैतिकता पर दूसरी विचारधारा KANT द्वारा प्रकट की गई है। यहां नैतिकता का निर्णय किसी कार्य के औचित्य के आधार पर होता है। नैतिकता की इस अवधारणा ने प्राचीन काल से चली आ रही अनेक मान्यताओं को चुनौती दी है।

PURVA MIMAANSA

John Stuart Mill ने नैतिकता की तीसरी विचार धारा को जन्म दिया है जिसका आधार उपयोगिता है। उदाहरणार्थ – यदि बहुत से जीवों को थोड़े से जीवों के दुख के बदले प्रसन्नता एवं सुख प्राप्त हो, यह कतिपय अनैतिक नहीं है।

नीतिशास्त्र की विभिन्न विचाारधाराओं ने संगीत को भी प्रभावित किया है। शोभना नारायणन अपनी पुस्तक "Performing Arts of India" में Plato को उद्धत करते हुए लिखती है, Plato ने अपने ग्रंथ Meno को एक प्रश्न से आरम्भ करते हुए सुकरात से पूछा है – क्या सद्गुण को पढ़ाई द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता है? सुकरात ने जवाब दिया सदगुण को पढ़ाई द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता बल्कि इससे 'संस्मरण' कराया जा सकता है, अभिप्राय है प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं में झांकना होगा और यदि वह ऐसा करने में असक्षम है तो उसके लिए 'सम्पर्क' आवश्यक है। यह किसी दार्शनिक, पथ प्रदर्शक या कला निष्पादक के प्रयास से संभव है जो उस भटके हुए व्यक्तित्व का ध्यान सही मार्ग पर लाकर उसके अन्तर्लीन होने में सहायक है।' एकाग्रता, साधना तथा स्वयं पर नियंत्रण संगीत कला के वांछनीय गुण है जो संगीतकार को सहज ही प्राप्त होते है। इनके द्वारा यह श्रोता को हर्ष, शील, विनय, सयंम और नियम का पाठ पढ़ाता है। दूसरे शब्दों में संगीतकार तथा श्रोता नादब्रह्म में अवगाहन करते हुए सद्गुणों को प्राप्त करते है।

वैश्वीकरण तथा नैतिकता में आई नई विचारधारा ने विश्व के समस्त संगीत को प्रभावित किया है। इस नये वातावरण में हमारे संगीत का निम्नप्रकार से मूल्यांकन किया जा सकता है–

(i) शास्त्रीय संगीत – हमारा शास्त्रीय संगीत नैतिकता का पर्याय है। ऐसे संगीत के अभ्यास के लिए कठोर साधना की आवश्यकता है। साधना से मन में उठने वाले नकारात्मक विचार धीरे धीरे लुप्त हो जाते हैं और साधना का स्वरूप–यत्र चित्तम् अचित भवति – जहां चित अचित हो जाता है अर्थात् साधक आत्म–विस्मृत हो जाता है। अरस्तु की 'स्वयं की पहचान', सुकरात की 'ज्ञान द्वारा आत्म शुद्धीकरण' तथा हमारे उपनिषदों में व्याप्त 'आत्म नियंत्रण' की नीतिगत अवधारणा को आत्मसात् करते हुए हमारा शास्त्रीय संगीत आत्मा से परमात्मा को मिलाने की शक्ति रखता है, तभी नीतिशास्त्र के सर्वश्रेष्ठ आचार्य याज्ञवल्क्य 'याज्ञवल्क्य स्मृति' में कहते है – 'जिसने वीणा बजाने का रहस्य जान लिया, जो श्रुति और जाति के ज्ञान पर अधिकार रखता हो और ताल ज्ञान में निपुण हो, वह बिना किसी प्रयास के मोक्ष प्राप्त कर लेता है।'

(ii) भाव संगीत – यद्यपि इसमें शास्त्रीय संगीत जैसी कोई बंदिश नहीं होती तथापि स्वरों की अपेक्षा शब्दों की संख्या अधिक होने से यह बहुत कर्णप्रिय होता है। इसमें भक्ति संगीत तथा लोकसंगीत का कुछ भाग नीतिपरक शब्दावली से ओत–प्रोत होता है। अधिकांश लोक संगीत नारी समस्याओं पर अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रकाश डालता हैं। भ्रूण हत्या, लिंग भेद, बाल विवाह, दहेज प्रथा, निरक्षरता इत्यादि विषयों पर लोक गीतों में सार्थक सवाल–जवाब होते है जिन्हें हम KANT के युक्तिसंगत अवधारणा का प्रतिफल कह सकते हैं।

(iii) पश्चिम से आयातित पॉप तथा High beat संगीत – पश्चिम में उत्पादित रॉक संगीत ने नैतिक मूल्यों को पूरी तरह ताक पर रख दिया है। ड्रम पर बजते High beat संगीत ने युवा पीढ़ी को ऐसा उद्दीप्त किया है कि वह अच्छे बुरें, उचित–अनुचित का अन्तर भूलकर नशे तथा हिंसा की ओर अग्रसर हो रहे हैं। भारत में कही–कहीं पॉप म्यूजिक, फिल्मी संगीत तथा लोक गायकी द्वारा अभद्र भाषा व अश्लील वीडियो के प्रयोग से संगीत नैतिकता का शत्रु लगने लगा है। ऐसे संगीत से अगर अनेक लोगों को सुख मिलता है तब भी यह दुर्भाग्यपूर्ण है। इस प्रकार की लचर एवं अनैतिक संगीत पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए

PURVA MIMANSA

कुछ स्थानों पर अन्दोलन भी हुए है।

संगीत में पनप रहे प्रदूषण से छुटकारा पाने के लिए William Kilpatriek ने कुछ उल्लेखनीय सुझाव दिए हैं, जिन्हें भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है।

सांझा संगीत – ऐसे संगीत को बढ़ावा दे जिसे परिवार के सभी सदस्य छोटे बड़े इकट्ठे बैठकर सुन सके। कोशिश होनी चाहिए कि हम टेलिविजन न चलाकर किसी संगीत–वाद्य को बजाये या अच्छे नीतिपरक संगीत को सुने। जिन कारणों से संगीत में अश्लीलता आई है, उनको दूर करने के सच्चे प्रयास करने चाहिए तथा पुराना संगीत व पुरानी परम्परा का प्रचार करना चाहिए।

संवेदनायुक्त संगीत – शिक्षा का अर्थ संवेदना को नकारना नहीं है बल्कि उसे सकारात्मक बनाना है जिससे कार्य भली प्रकार से हो सके। परिष्करण की इस प्रक्रिया से संवेदनाएं निर्बल नहीं होती उल्टे यह उन्हें एकाग्र कर और अधिक शक्ति प्रदान करती है। इसके लिए ठोस सांगीतिक प्रयासों की आवश्यकता है चाहे यह व्यक्तिगत हो या सामूहिक। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा मध्यकाल के भक्ति आन्दोलन के समय सांगीतिक संवेदनाओं से ऊर्जा प्राप्त कर समाज में रचनात्मक स्फूर्ति पैदा हुई।

संगीत हमारी आत्मा का स्वरूप है – नैतिकता केवल अच्छे और बुरे को परखने के नियम नहीं सिखाती अपितु हमारे सम्पूर्ण विकास की मुखापेक्षी है। संगीत में भी एक सम्मोहन होता है जिससे मनुष्य के कार्यों को नियंत्रित किया जा सकता है। व्यवस्था, सन्तुलन तथा सामंजस्य की भावना से ओत–प्रोत संगीत हमें जीओ और जीने दो का पाठ पढ़ाता है। प्राचीन काल से ऐसा विश्वास किया जाता है कि सितारे, चंद्रमा, ग्रह तथा समस्त सृष्टि संगीत द्वारा गति प्राप्त करते है।

शाश्वत संगीत – सदियों से वेदों का मंत्रोच्चारण यथावत बना हुआ है और यह वैदिक काल से बिना किसी लिपि के पीढ़ी दर पीढ़ी चलता आया है। ऐसे संगीत का प्रचार सदैव प्रशंसनीय है। भारतीय शास्त्रीय संगीत ने भी सामगान से सामग्री प्राप्त कर अमरता ग्रहण की है। भारतीय संगीत की सर्वकालीन विशेषता पर पं. रविशंकर ने अपनी पुस्तक 'माई म्यूजिक माई लाईफ' में बहुत ही सुदंर विचार प्रकट किए हैं। 'भारतीय संगीत की सबसे सुदंर खूबी है कि इसका न कोई रूप, न कोई शैली कभी भी पूर्णतया विस्मृत या परित्यक्त हुई है। अलबत्ता इसके रूपों तथा शैलियों में परिवर्तन हुए हैं, और यह एक 'नई' व्यवस्था में सम्मिलित हो पाये है। परिणामस्वरूप हमारा संगीत विभिन्न परतों में संरचित हुआ है और इसकी प्रत्येक परत अपने नीचे वाली परत से आश्रय तथा जीवन ग्रहण करती है।'

किस्सा तथा वृतान्त द्वारा संगीत का प्रचार – हर साल मनाये जाने वाली राम लीला तथा रास लीला में उत्तम प्रकार का संगीत प्रयुक्त कर के प्राचीन परम्पराओं को और भी समृद्ध किया जा सकता है। तीजन बाई की किस्सा कहने की अद्भुत कला से लोग बेबस ही अभिभूत हो जाते है। पंजाब की वार गायन परम्परा आज भी लोगों में शौर्य, उत्साह तथा नीतिगत सन्देश संचालित करने की उत्तम कला है।

वैश्वीकरण तथा वैज्ञानिक विचार धारा ने हमें नैतिकता के नये अर्थ ढूंढने के लिए विवश किया है। नैतिकता के इस नये अक्ष का कौन सा पक्ष प्रकृति एवं सत्य के करीब है – सच्ची नैतिकता का द्योतक है। इसलिए हमें हर जगह उदारवादी होने का राग न अलापते हुए हमारी सदियों की परम्पराओं तथा संगीत को वर्तमान परिपेक्ष्य में सकारात्मक दृष्टिकोण से परख कर समाज में प्रचारित एवं प्रसारित करना चाहिए। तभी तो पाइथोगोरियन कहते थे – Music is a continuous challenge to the inquiring mind'.

संदर्भ सूची

Bilmora, Purusotham. "Indian Ethich" Libration of Congress. Delhi : Cataloguing in Publication.

Basam, A.L. The Wonder that was India. Delhi : Rupa & Co.

Wikipedia.com.

Naryan, Shobana. Performing Arts in India. Delhi: Kanishka Publication.

पांडे, डॉ. गोबिन्द चंद। भारतीय परम्परा के मूल स्वर. नई दिल्ली : नैशनल पब्लिशिंग हाऊस।

शास्त्री, के. वासुदेव. 'संगीत शास्त्र' हिन्दी समिति. सूचना विभाग उ.प्र. लखनऊ।

www.catholiceducation.com

संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस

Shankar, Pt. Ravi. My Music, My Life. Delhi: Rupa & Co.

Arnold, Denis. The New Oxford Companion to Music. Oxford: Oxford University Press.

PURVA MIMAANSA